महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा
(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

अंक-१ माह -अगस्त वर्ष २०२१ विक्रमी संवत २०७८

महर्षि प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ।।

संरक्षक-
श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)
श्री मनोहरलाल खट्टर
(माननीय मुख्यमंत्री हरियाणा)
श्री कंवरपाल गुर्जर
(माननीय शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक-
प्रो. बृजकिशोर कुठियाला
(अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद्, हरियाणा)
प्रो. राजकुमार मित्तल
(कुलपति)

प्रधान सम्पादक-
प्रो. यशवीर सिंह
(कुलसचिव)

सम्पादक-
डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय

सहसम्पादक-
डॉ. नरेश शर्मा
डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. शशिकान्त तिवारी
डॉ. शर्मिला

छात्र सम्पादक
रजनी
शीतल

ई-मेल - maharishiprabhamvsu@gmail.com

मनोहर लाल
MANOHAR LAL

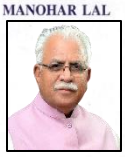

मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।
CHIEF MINISTER, HARYANA,
CHANDIGARH.

Dated 5-8-2021

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल द्वारा संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार के साथ ही विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों से लोगों को अवगत करवाने के लिए मासिक ई–पत्रिका "महर्षि प्रभा" का प्रकाशन किया जा रहा हैं।

संस्कृत भाषा को भारत की ही नहीं अपितु विश्व की प्राचीनतम व श्रेष्ठतम भाषा माना जाता है। विश्व में प्रचलित कई भाषाओं की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से ही हुई है, यह अब सिद्ध हो चुका है।

हरियाणा सरकार द्वारा समृद्ध संस्कृत भाषा से दूर होती जा रही युवा पीढ़ी में इस भाषा के प्रति अधिक से अधिक रुचि उत्पन्न करने और इस भाषा को अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए ठोस प्रयास किए जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों के तहत महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है।

आशा है कि महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय अपने विभिन्न कार्यक्रमों, योजनाओं और गतिविधियों के माध्यम से राज्य सरकार के इन प्रयासों को संबल प्रदान करेगा। साथ ही, प्रदेश में संस्कृत साहित्य और साहित्यकारों के विकास एवं संरक्षण के लिए एक अनुकूल माहौल तैयार करेगा।

मैं विश्वविद्यालय की मासिक ई–पत्रिका "महर्षि प्रभा" के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(मनोहर लाल)

Office : 4th Floor, Haryana Civil Secretariat, Chandigarh - 160001, Ph. 0172-2749396, 0172-2740995 (Fax)
Resi. : H.No. 1, Sector-3, Chandigarh - 160001, Ph. 0172-2749394, 0172-2740596 (Fax)
email : cmharyana@nic.in

प्रो० देवीप्रसादत्रिपाठी
कुलपतिः
Prof. Devi Prasad Tripathi
Vice Chancellor

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः
हरिद्वार-देहली-राष्ट्रीयराजमार्गः
बहादराबादः, हरिद्वारम्-249402 (उत्तराखण्डम्)
सचलदूरभाषः/M : 9868155588
ई-मेलसङ्केतः/E-mail : vc@usvv.ac.in
अनजलम्/Website : www.usvv.ac.in
Haridwar-Delhi-National Highway
Bahadrabad, Haridwar-249402 (Uttarakhand)

पत्रांक 1618/कुलपति प्रदत्त
दिनांक 19 अगस्त 2021

शुभाशंसा

निखिलेऽपि भूपटलेऽस्मिन् नैकभाषाणां जननी संस्कृताभिधानेयं देववाणी विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा वर्तत इति नाविदितं विद्वानुरागभाजाम्। सर्वप्राचीना सत्यपि चिरतरुणीयमद्यापि नैकभाषाः तत्साहित्यं च निजनवनवशब्दप्रदानादिना समेधन्ती देदीप्यते। विगतवर्षैकदशकाद् विश्वस्मिन् विश्वे जनानां संस्कृतं तत्प्रतिपाद्यभारतीयप्राचीनविद्याश्च प्रति जिज्ञासाऽभिरुचिश्च पुनः वर्धमाना विलोक्यते। वेद–वेदांग–दर्शन–योगायुर्वेदवास्तु–प्रभृतिवैज्ञानिकविषयाणां माध्यमेन भारतमिदं ज्ञानविज्ञानजनकतया अप्रतिमप्रतिष्ठामलभत। अतः संस्कृतस्य तद्भाषानिबद्धवेदवेदांगादिशास्त्राणां च समुचितं संरक्षणं संवर्धनं प्रचारप्रसारादिकं चावश्यकम्। अस्मिन्नेव क्रमे संस्कृतस्य भारतीयप्राचीनविद्यानां संरक्षणाय संवर्धनाय प्रचारप्रसाराय अध्ययनाध्यापनाय गहनानुसन्धानाय च हरियाणासर्वकारेण 2018 तम ईस्वीये वर्षे महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः स्थापितः। अधुना विश्वविद्यालयोऽयं निरन्तरं समेधमानः सन् नूतनां प्रशस्तां च कीर्तिं विस्तारयतीत्येतदर्थं विश्वविद्यालयीयप्रशासनशैक्षणिकविभागौ सदैव वर्धापनभाजौ वर्तेते।

सम्प्रति संस्कृतक्षेत्रे प्राच्यविद्याक्षेत्रे च आधुनिक–सन्दर्भे भारतीयविद्यानामुपयोगितायां विषये प्रासंगिकतायां विषये च नूतनगहनवैज्ञानिकानुसन्धानस्यावश्यकता समनुभूयते। तदेतदुद्देश्यसाफल्यमभिप्रेत्य विश्वविद्यालयेन "महर्षिप्रभा" नाम्नाः शोधपत्रिकायाः प्रकाशनं विधीयत इति निशम्य मोमुद्यते मानसमस्मदीयम्। प्रकाशनमिदं संस्कृतशोधक्षेत्रे निरुपमां कीर्तिं प्रतिष्ठापयिष्यतीति मदीयो द्रढीयान् विश्वासः एतदर्थं सर्वेभ्योऽपि प्रकाशनसमितिसदस्येभ्यो मे हार्दाः शुभाशयाः।

19/08/21
(प्रो. देवीप्रसादत्रिपाठी)
कुलपतिः

संदेश

संस्कृत भाषा केवल भाषा मात्र नहीं है। संस्कृत भारतीय संस्कृति का आधार है। 'संस्कृति संस्कृताश्रिता' भारतीय संस्कृति संस्कृत पर आश्रित है। विश्व का समस्त ज्ञान-विज्ञान यदि किसी साहित्य में प्राप्त होता है तो वह संस्कृत भाषा है। वैदिक काल से लेकर आज तक निरन्तर अपने ज्ञान प्रवाह से विश्व को आलोकित करने वाली भाषा है संस्कृत भाषा।

ज्ञान-विज्ञान की अजस्र परम्परा की धारा संस्कृत ग्रन्थों से निकलती है। गणित, ज्योतिष, धातु विज्ञान, शिल्प विज्ञान, रसायन विज्ञान, आयुर्वेद, यन्त्रनिर्माण, संगणक विज्ञान आदि सभी प्रकार का ज्ञान संस्कृत मन्दाकिनी से निःसृत है। भारतीय ऋषियों द्वारा अपनी तप ज्योति से प्रज्जवलित ज्ञान परम्परा को लौकिक साहित्य के आदि कवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण भारतीय संस्कृति का मूर्तिमान स्वरूप प्रस्तुत करती है। भारतीय संस्कृति का मूर्त रूप रामायण के प्रत्येक पात्र के जीवन में दिखाई देता है। महर्षि वेद व्यास द्वारा प्रणीत महाभारत ग्रन्थ सब प्रकार के ज्ञान और विज्ञान से परिपूर्ण है यह आज भी सर्व स्वीकृत है। इसके विषय में कहा गया है कि जो यहाँ है वह सर्वत्र है जो इसमें नही है वह कहीं नही है। प्राणिमात्र को आरोग्यता का संकल्प लेकर लिखा गया आयुर्वेद आज भी चिकित्सा जगत के लिए आदर्श है। आयुर्वेद में जिस प्रकार चिकित्सा के सभी अङ्गों का समावेश किया गया है वह आज के चिकित्सा शास्त्रियों के लिए आश्चर्य है। विश्व के समस्त ज्ञान-विज्ञान संस्कृत ग्रन्थों मे निहित है। गणित, धातुविज्ञान, शिल्प विज्ञान, स्थापत्य विज्ञान, विमान निर्माण कला, मौसम विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, वास्तु, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, परमाणु विज्ञान तथा अन्तरिक्ष विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में संस्कृत का प्रकाश दिखाई देता है। भारत की समस्त ज्ञान परम्परा की मन्दाकिनी का उद्गम संस्कृत वाङ्मय है। इसका संरक्षण संवर्द्धन पोषण पल्लवन करना हम सभी का धर्म है। इस सभी के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार में विश्वविद्यालयों की महती भूमिका रहती है। हरियाणा राज्य सरकार द्वारा कैथल में स्थापित महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय ज्ञान की उस परम्परा को आगे बढ़ाने में महती भूमिका निभा रहा है। विश्वविद्यालय के समस्त क्रियाकलापों की जानकारी जन समाज तक पहुँचे इस निमित विश्वविद्यालय द्वारा मासिक ई-पत्रिका 'महर्षि प्रभा' का प्रकाशन निश्चित ही प्रशंसनीय है। पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल हो ऐसी मेरी भावना और शुभकामना है।

प्रो. राज कुमार मित्तल
कुलपति

संदेश

असीम प्रसन्नता का विषय है कि महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के द्वारा मासिक ई-पत्रिका के रुप में "महर्षि प्रभा" का आरम्भिक अंक प्रकाशित हो रहा है। जिसकी उपादेयता संस्कृत, संस्कृति एवं संस्कार रूपी मार्गदर्शक के रुप में स्वंयसिद्ध होगी।

'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' उक्त महावाक्य से संस्कृत एवं वेद में समाहित प्राचीनकालिक सभ्यता, दर्शन एवं आध्यात्मिक उच्च विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम यह पत्रिका होगी। समाज में मानवमूल्यों, कर्तव्यों आदि के विषय में महर्षि मनु, याज्ञवल्क्य आदि के माध्यम से मानवीय व्यवहार के साथ-साथ आयुर्वेद, अर्थशास्त्र, ज्योतिष एवं साहित्यिक गौरव को पत्रिका के माध्यम से समाज के बीच पहुँचाने का एक अच्छा प्रयास विश्वविद्यालय के द्वारा किया जा रहा है। इसकी निरन्तरता में विश्वविद्यालय को अपने नाम के अनुरूप महर्षि वाल्मीकि के आदिकाव्य रामायण से एवं आरण्यक, उपनिषद् आदि का मानव मूल्यों पर श्रेष्ठतम ज्ञान स्थापित करने का एक केन्द्र होगी।

इन्हीं भावों को ध्यान में रखते हुए हरियाणा सरकार द्वारा स्थापित यह विश्वविद्यालय भारतीय परम्परागत ज्ञान एवं विज्ञान का आधुनिक शिक्षा के साथ सामञ्जस्य बिठाकर पुनः संपूर्ण विश्व को दिशा देने तथा समाज में भारतीय परम्पराओं एवं मूल्यों को स्थापित कर आगे ले जाने का प्रयास करेगा।

प्रो. यशवीर सिंह
कुलसचिव

सम्पादकीयम्

संस्कृत भाषा प्राचीनतमा भाषा विद्यते। स्वीक्रियते यत् विश्वस्य सर्वाधिकी वैज्ञानिकी भाषास्ति संस्कृतम्। भारतीया सर्वाभाषा अनया एव निस्सृताः सन्ति। जनाः मन्यन्ते यत् पुरा भारते जनसामान्ये संस्कृत भाषायाः प्रचलनमासीत्। एषे भाषास्ति यस्यां विश्वस्य आदि ज्ञानं वेद रूपे लिखितमस्ति देवानां ऋषीणां चेयं भाषा अद्यपि स्वस्व वैज्ञानिक स्वरूपं धृत्वा विश्वस्य ज्ञान-पिपासुनाम् कृते आह्लादयति। स्ववैज्ञानिकतां निधाय भाषेयं आधुनिक संदर्भेऽपि महती भूमिकां निवोढ्य विश्वमाकर्षयति। संस्कृतं न केवलं भाषास्ति अपितु भारतीय संस्कृतेः आत्मास्ति। संस्कृतं विना भारतं भारतं नास्ति। एतस्याः भाषायाः संरक्षणं संवर्द्धनञ्च अस्माकं कर्त्तव्यमस्ति सहैव तन्निहितं ज्ञान-विज्ञानं वर्तमान सन्दर्भे समाजाय उपयोगी स्यात् एतस्य कृते अपि प्रयासं करणीयमस्माभिः। हरियाणा राज्य सर्वकारेण स्थापितं महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय एतस्यां महती महती भूमिका निर्वहति। एतस्मिन विश्वविद्यालये न केवलं संस्कृत भाषायाः संरक्षणं भवति अपितु भारतीय परम्परायाः आपि संरक्षण क्रियते।

विश्वविद्यालये पठ्यमानाम् छात्राणां कृते पाठ्यमानानां आचार्याणां कृते नितरामावश्यकं प्रतीयते यत् विश्वविद्यालयस्य संञ्चाल्यमाना क्रियाविदाः समाजाय अपि उपयोगिनः स्युः सहैव छात्राणां अपि निरन्तरं विकासं भवेत् एवेमभिलक्ष्य विश्वविद्यालयस्य मान्याः कुलपतिवर्याः प्रेरणया एतस्या मासिकी 'ई पत्रिकायाः' प्रकाशनं क्रियते। पत्रिकायाम् विश्वविद्यालयस्य गतिविधयः संस्कृते निहित ज्ञान-विज्ञानं बालानां कृते बाल मेदिनी छात्राणां ज्ञान-वर्धनाय प्रश्नावली, मनोरंजनाय गीतं संस्कृत भाषा शिक्षणाय व्यवहार संस्कृतं तथा प्रहेलिका आदयः अस्यां पत्रिकायां समाविष्टं क्रियते। पत्रिका सर्वेभ्यः पाठकेभ्यः लाभप्रदं भविष्यत्याशामहे।

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय

गतिविधयः

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया आजादी का अमृत महोत्सव

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में हर्षोल्लास पूर्वक आजादी का अमृत महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के साहित्य विभाग में प्रोफेसर डॉ.कृष्ण चन्द्र पाण्डेय ने आजादी के महत्त्व को बताया और उन शहीदों को स्मरण किया जिनके त्याग और बलिदान के कारण आज हम यह उत्सव मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमे यह भी स्मरण रखना चाहिए कि आजादी से एक दिन पूर्व हमने देश का एक बडा भाग खोया है। हम अपने गौरवशाली अतीत को याद करेंऔर चिन्तन करें कि विश्व गुरु तथा सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत पराधीन कैसे हुआ? वह कारण पुनः उपस्थित न हो इसके लिए हम कृत संकल्प रहें। हम जिस क्षेत्र में भी कार्यरत हों पूर्ण निष्ठापूर्वक अपने धर्म का पालन करें।

स्वाधीनता के 75 वर्ष पूर्ण होने तक भारत स्वावलंबी और शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में खडा होगा यह हमारा दृढ विश्वास है। इस कार्य में हमारा क्या योगदान हो सकता है यह हम सोचना चाहिए। स्वाधीनता दिवस का यह कार्यक्रम महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय तथा डॉ.भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ।

दिनांक **09.07.21** को प्रो. राजकुमार मित्तल (माननीय कुलपति-चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी) द्वारा महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति पद का अतिरिक्त कार्यभार के रुप में कार्यभार ग्रहण किया गया।

वृक्षारोपण

विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण करते हुए मा॰ कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल, कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह एंव महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. सुनीता अरोडा

दिनांक 13/08/2021 को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, मून्दड़ी, कैथल के अस्थायी कार्यालय परिसर में डॉ. भीम राव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय में पर्यावरण संरक्षण हेतु पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल, कुलसचिव यशवीर सिंह और महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. सुनीता अरोड़ा द्वारा पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर माननीय कुलपति महोदय जी ने सभी को पौधारोपण करने के लिए और पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरुक किया साथ ही कुलसचिव महोदय जी ने भी वेदों में प्रकृति से सम्बन्धित श्लोक के माध्यम से मार्गदर्शन किया। तदुपरान्त महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. सुनीता अरोड़ा ने पौधारोपण और पर्यावरण संरक्षण करने के लिए संकल्प दिलवाया। इस शुभ अवसर पर विश्वविद्यालय के आचार्य और कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

गुरुवन्दनसमारोहस्य समायोजनं सम्पन्नम् ।

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः, कैथलम्, हरियाणा तथा च भारतीयशिक्षणमण्डलः इत्यनयो संयुक्ततत्त्वावधाने "गुरुवन्दनसमारोहः" इत्यस्य आयोजनं तरङ्गमाध्यमेन कृतम् । कार्यक्रमस्य शुभारम्भः वेदविभागस्य सहायकाचार्येण डॉ. अखिलेशकुमारमिश्रमहोदयेन वैदिकमङ्गलाचरणवाचनेन कृतम् । कार्यक्रमे मुख्यवक्तारूपेण डॉ. जितेन्द्रभारद्वाजमहोदयः (कुलसचिवः – चौ. बन्सीलालविश्वविद्यालयः, भिवानी एवञ्च प्रदेशाध्यक्षः – भारतीयशिक्षणमण्डलः) आसीत् ।

कार्यक्रमे आगतानाम् अतिथिनां गणमान्यानाञ्च परिचयं विश्वविद्यालयस्य कुलसचिवः प्रो. यशवीरसिंहमहोदयेन कृतम्। कुलसचिवमहोदयेन गुरोः महताविषये संक्षिप्तरूपेणोक्तम् । मुख्यवक्तामहोदयेन "शिक्षाक्षेत्र-समाजोत्थाने च गुरोः भूमिका" विषये सर्वेषां मार्गदर्शनं कृतम् ।महोदयेनोक्तं यत् वेद-पुराण-संस्कृतग्रन्थं तथा च गुरुशिष्यपरम्परायुक्तं तक्षशिला-नालन्दाविश्वविद्यालयौ आविश्वस्य मार्गदर्शनं कृतवन्तौ। महोदयेन पश्चिमीसभ्यता-संस्कृतिकारणेन भारते जायमानं परिवर्तनविषये तथा च सामाजिकसम्बन्धेषु परिवर्तनविषयेऽपि विस्तृतरूपेण वर्णितम् । शिक्षकाः समाजोत्थाने कथं मार्गदर्शनं कर्तुं शक्नुवन्ति अस्मिन् विषयेऽपि उक्तवन्तः । कर्त्तव्यपालनेन शिक्षकाः निजछविं समाजस्य पुरतः स्थापितुं शक्नुवन्ति । विद्यार्थिनः स्वशिक्षकं दृष्ट्वैवाचरणं कुर्वन्ति । तथैव अग्रे उत्तमाः विद्यार्थिनः पुनः उत्तमशिक्षकरूपेण समाजे कार्यं कुर्वन्ति । कार्यक्रमस्य समापने विभागाध्यक्षः डॉ. जगतनारायणमहोदयेन विश्वविद्यालयपक्षतः सर्वेषाम् आगतानाम् अतिथिनां गणमान्यानाञ्च धन्यवादज्ञापनं कृतम् । कार्यक्रमे भारतीयशिक्षणमण्डल तथा च संस्कृतविश्वविद्यालयस्य पञ्चाशत् कार्यकर्तारः उपस्थिताः आसन् । मञ्चसञ्चालनं ज्योतिषविभागस्य सहायकाचार्यः डॉ. नरेशशर्ममहोदयेन कृतम्।

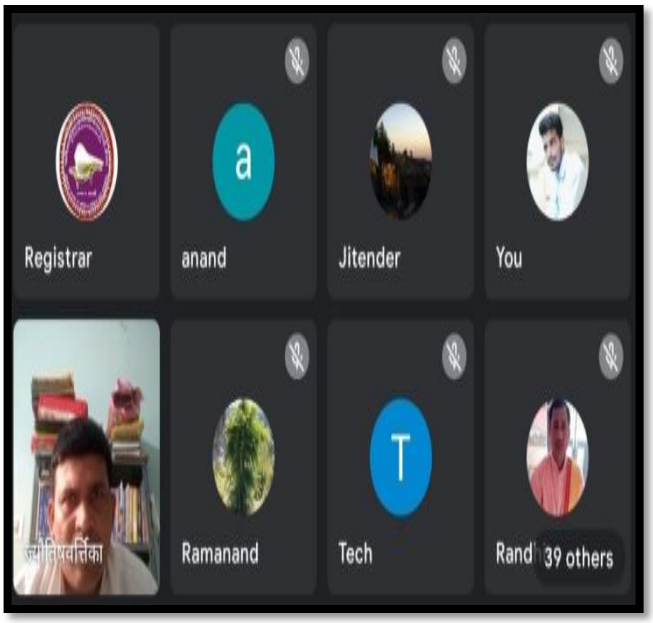

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयेकोविडनियमपुरस्सरं निर्विघ्नतया परीक्षास्सुसम्पन्नाः

हरियाणाप्रदेशस्य महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालये **27/07/2021** दिनाङ्कतः प्रचल्यमानाः शास्त्री-आचार्य-डिप्लोमादिकक्षायास्समस्ता अपि परीक्षाः **19/08/2021** दिनांके सुसम्पन्नतां याताः । परीक्षायां प्रतिपदं कोरोनानियमपालनं सर्वैरधिकारिकर्मचारि-विद्यार्थिभिश्च कृतम् । मुखाच्छादकं धृत्वा सामाजिकीं दूरीञ्च संस्थाप्य कोविडनियमपुरस्सरं परीक्षा सम्पन्नतां जाता ।

सप्तम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

21 जून को विश्वविद्यालय परिसर में सप्तम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. श्रेयांश द्विवेदी और कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह उपस्थित रहे। कुलपति जी ने योग के बारे में अध्यक्षीय उद्बोधन से सभी का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि योग हमें अनुशासन में रहना सिखाता है। योगासन भी अपने आप में अनुशासित है। योग में आरोग्य एवं स्वास्थ्य निहित है। "योगः कर्मसु कौशलम्" तथा "लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु" आदि वाक्यों को जीवन में अवश्य अपनाया जाना चाहिए।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्रों एवं कर्मचारियों द्वारा योग प्रोटोकॉल का अभ्यास किया गया। शास्त्री योग के विद्यार्थियों प्रियंका व विष्णु द्वारा संगीतमय योग की प्रस्तुति दी गई। आचार्य कक्षा के विक्रम द्वारा जलनेति व सुत्रनेति का प्रदर्शन किया गया। अंजलि व कोमल द्वारा विभिन्न योगासन का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर छोटे बच्चों ने भी योग प्रदर्शन कर बहुत ही सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के समापन पर कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह जी ने वर्तमान संदर्भ में योग कि उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम का मंच संचालन विश्वविद्यालय के योग विभाग के आचार्य डॉ. देवेंद्र जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के आचार्य, अधिकारीगण एवं कर्मचारियों की उपस्थिति रही।

भारत की एकात्मता और आध्यात्मिक चेतना का आधार संस्कृत भाषा

किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा एवं संस्कृति से होती है। भाषा ही किसी राष्ट्र की शक्ति होती है। भाषा ही समाज को अपने राष्ट्र के साथ जोड़ती है। भाषा के कारण न केवल संस्कृति का संरक्षण होता है अपितु राष्ट्र के साथ अनन्य संबंध भी स्थापित होता है। विश्व के अनेक राष्ट्र जो अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित होने के कारण विश्व में उदाहरण स्वरूप जाने जाते हैं। वे अपनी भाषा के प्रति समर्पित हैं। अपनी भाषा के प्रति स्वभिमान राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान को जागृत करता है। जिसमे अपनी भाषा का स्वाभिमान नहीं है। वह अपने राष्ट्र के प्रति भी समर्पित नहीं हो सकता। ऐसा व्यक्ति मृतक समान और पशु है। जिसको न निज भाषा तथा देश का स्वाभिमान है,वह नर नहीं है पशु निरा और मृतक समान है।

किसी भी भाषा की अपनी प्रकृति होती है उसका इतिहास होता है। उसकी अपनी पहचान होती है, भाषा की व्यापकता और प्राचीनता के साथ उसका एक वैज्ञानिक स्वरूप होता है। भाषा की वैज्ञानिकता इससे सिद्ध होती कि उसमें नवीन शब्दों को गढ़ने की कितनी क्षमता है। संस्कृत के विषय यह कहा जा सकता है कि संस्कृत भाषा भारत की सभी भाषाओं की प्राण शक्ति है। भारत की प्राय: सभी भाषाएं संस्कृत भाषा से अनुप्राणित हैं। इसीलिए भाषाई विविधता के बाद भी संस्कृत भाषा के प्रति संपूर्ण देश में एक स्वर दिखाई देता है। उसका कारण यही है कि सभी भाषाओं में संस्कृत शब्दों का प्राचुर्य मिलता है। दक्षिण भारत की सभी भाषाओं मि उच्चारण शैली संस्कृत भाषा मे समान है। मलयालम, तमिल, तेलगू, कन्नड़, उड़िया, बांग्ला आदि सभी भाषाओं में संस्कृत शब्द बहुतायत में दिखाई मिलतें हैं। मलयालम भाषा संस्कृत प्रधान भाषा है। मलयालम साहित्य संस्कृत प्रधान साहित्य है। मलयालम साहित्य के पुराण इतिहास ग्रंथो में वाल्मीकि रामायणं, वैराग्य चंद्रोदयम, पाताल रामयनम, भीष्मोपदेशम आदि उल्लेखनीय ग्रंथ है।

मलयालम भाषा का प्रथम ग्रंथ उन्नीयच्ची चरितं संस्कृत निष्ठ भाषा मे है। तमिल का प्रथम ग्रंथ तोलकप्पयम, तेलगू का प्रथम ग्रंथ आंध्र महाभारतं, कन्नड़ का प्रथम ग्रंथ कविराज मार्ग संस्कृत युक्त भाषा मे है। मलयालम भाषा में संस्कृत विभक्तियों का प्रयोग मिलता है। मलयालम की मणि प्रवाल शैली पूरी तरह संस्कृत निष्ठ है। तेलगू भाषा में 80 प्रतिशत शब्द संस्कृत हैं। संस्कृत भाषा ने सम्पूर्ण देश की भाषाओं को एक सूत्र में बांधने का काम किया है। भारत की सभी भाषाओं के ग्रंथों में संस्कृत की छाया मिलती है। संस्कृत भारत की सभी भाषाओं की जननी है। सम्पूर्ण भारत की एक मात्र संपर्क भाषा संस्कृत ही हो सकती है। संस्कृत भाषा सभी भारतीय भाषाओं की जननी होने के कारण भारती नाम से भी जानी जाती है।

धर्म ही मानव जीवन का आधार है। यह संस्कृत साहित्य से ही जान सकते हैं। संस्कृत साहित्य ही है जो विज्ञान और आध्यात्म को जोड़ता है। यह संसार धर्म की धुरी पर टिका है। धर्म ही प्रत्येक तत्त्व अपने नैतिक मूल्य से आबद्ध किये हुए है। संस्कृत साहित्य सभी नैतिक मूल्य का आगार है। संविधान समिति के समक्ष डॉ. अम्बेडकर ने संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव किया था। उन्होंने संविधान समिति में राष्ट्रभाषा एवं राज्य व्यवहार की अधिकृत भाषा से संबंधित अनुच्छेद में संस्कृत को राष्ट्र एवं राज्य व्यवहार की पर्यायी भाषा रखने के विषय सुझाव दिए। पत्रकारों ने जब इस विषय मे अम्बेडकर से पूछा तो उन्होंने कहा (What is wrong with Sanskrit)।

संविधान सभा के सदस्य लक्ष्मीकांत मैत्र इस संशोधन का जोरदार समर्थन किया और कहा कि हिंदी जैसी किसी विशिष्ट प्रान्त की भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने से शेष प्रान्तों में संदेह और कटुता निर्माण हो सकती है।संस्कृत को राष्ट्र भाषा बनाने वह टाली जा सकती है। संस्कृत को मान्यता देकर दुनिया को हम बता देंगे कि हम अपने गौरव विन्दुओं का कितना सम्मान करते हैं? संसार को अपनी प्राचीन संस्कृति का आध्यात्मिक संदेश देने की इच्छा रखते है। संस्कृत को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर हम भावी पीढ़ी का उज्ज्वल भविष्य निर्माण कर सकते हैं।

ज्ञान- विज्ञान और आध्यात्मिक चेतना-

संस्कृत न केवल भारतीय ज्ञान विज्ञान की भाषा है अपितु भारत की आत्मा संस्कृत ग्रंथों में सन्निहित है। भारत की चिति को समझने के लिए भारतीय साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। वेद, उपनिषद, आरण्यक, पुराण, धर्मग्रंथ, रामायण, महाभारत, नाट्यशास्त्र, दर्शनशास्त्र योग सूत्र, कामसूत्र, अष्टाध्यायी आदि भारतीय ज्ञान मीमांशा के अनुपम ग्रंथ है। भारत की सांस्कृतिक धरोहर आज से नही हजारों वर्षों से अटूट चली आ रही है।

भारत की सांस्कृतिक धरोहर आज से नही हजारों वर्षों से अटूट चली आ रही है। वेदों को हम हिमालय माने तो उपनिषद उसकी चोटियां है। जो हमेशा ज्ञान के सूर्य से प्रकाशमान रहती है। सारे विश्व के दर्शनों में उपनिषद हमारी विचारधारा की चरम सीमा है।

संस्कृत न केवल भारतीय ज्ञान विज्ञान की भाषा है अपितु भारत की आत्मा संस्कृत ग्रंथों में सन्निहित है। भारत की चिति को समझने के लिए भारतीय साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। वेद, उपनिषद, आरण्यक, पुराण, धर्मग्रंथ, रामायण, महाभारत, नाट्यशास्त्र, दर्शनशास्त्र योग सूत्र, कामसूत्र, अष्टाध्यायी आदि भारतीय ज्ञान मीमांशा के अनुपम ग्रंथ है।

भगवद्गीता किंचित अधीता गंगाजल लवकनिका पीता।
सकृदपि येन मुरारी समर्चा क्रियते तस्य यमेन न चर्चा॥

भगवद्गीता का थोड़ा सा भी ज्ञान पाया हो, गंगाजल थोड़ा सा भी पिया हो और श्री कृष्ण को थोड़ा सा भी स्मरण किया हो, तो यम से कोई भय नहीं रहता। आदि शंकराचार्य से लेकर आज तक जितने भी बड़े-बड़े दार्शनिक और विचारक रहे हैं सभी ने भगवद्गीता को आधार माना है सभी की गीता के भाष्य करने में अपनी भूमिका रही है।

शंकराचार्य, मध्वाचार्य, बल्लभाचार्य रामानुजाचार्य आदि बड़े आचार्यों ने गीता पर भाष्य लिखे। हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के जो नेता थे वे सभी गीता से प्रभावित रहे। लोकमान्य तिलक ने गीता पर गीता रहस्य नाम से महान ग्रंथ की रचना की। महात्मा गांधी गीता को हमेशा अपने साथ में ही रखते थे। गीता किसी धर्म विशेष, किसी वर्ण विशेष, किसी देश विशेष का शास्त्र नही है। गीता का उपदेश समस्त मानव जाति के लिए है। यही कारण है कि गीता का प्रभाव केवल हिन्दू जाति पर ही नही सभी धर्मों के अनुयायियों पर है। भगवान कृष्ण कहते कि जो जिस प्रकार से मेरे पास आएगा मैं उसकी श्रद्धा को मजबूत करूँगा।

ये यथा माम् प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजामि अहम।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्या: पार्थ सर्वशः॥
यो यो यां यां तनु भक्त: श्रद्धया अर्चितुमिच्छन्ति।
तस्य तस्याचला श्रद्धा तामेव विदध्यामि अहम्॥

किसी भी कार्य के प्रति श्रद्धा आवश्यक है। श्रद्धा के बिना किसी कार्य की सिद्धि नही हो सकती। मैं उस श्रद्धा को दृढ़ करता हूँ। गीता का दूसरा पक्ष है, गीता हमारे सामने सम्पूर्ण योगशास्त्र रखती है। हमारी पद्धति में चार प्रकार के योग माने गए हैं।
1.ज्ञानयोग 2.कर्मयोग 3.भक्तियोग तथा 4.राजयोग।

योग को आत्मा और परमात्मा के मिलन का साधन माना जाता है। गीता में न चारों योगों का मिश्रण है। आज के मानव के लिए यह चारों योग आवश्यक हैं। ये चारों योग मनुष्य को व्यष्टि से समष्टि की ओर ले जाते है, व्यक्ति मैं से हम की ओर आ जाता है। ये सम्पूर्ण जगत एक ही तत्व से अनुश्रित है। एकं सद्विप्रा: बहुधा वदन्ति। एक ही सत्य है विद्वान लोग भिन्न भिन्न प्रकार से बोलते है। इस सत्य की प्रतीति यदि कहीं होती है तो वह उपनिषद हैं। वास्तव में उपनिषदों को हमारी शिक्षा व्यवस्था का अंग होना चाहिए।

यह कोई धर्म की बात नही है, किसी विशेष धर्म का प्रचार करना नही है। यह धर्मातीत है, सर्वव्यापी है। ये आध्यात्मिक और नैतिक मूल्य जब तक हम इस देश में स्थापित नहीं करेंगे तब तक भारत विश्व गुरु के स्थान पर पुनर्स्थापित नही हो सकता। जब हम उपनिषदों की विचार धारा को अपने जीवन में अपनाएंगे और कर्म करेंगें तब हम अपनी खोई हुई विरासत को पुन: पा सकेंगे। दुनिया के अनेक देशों के उदाहरण हमारे सामने हैं।

जापान पिछले विश्व युद्ध में पूरी तरह बर्बाद हो गया था। जर्मनी में, बर्लिन में युद्ध के अंत में एक भी घर नहीं बचा था। पूरा शहर समाप्त हो गया था। लेकिन आज जापान और जर्मनी के लोगों ने कर्मयोग को जीवन मे अपना कर अपने देश को पुनर्स्थापित किया किया है। अपने देश के प्रति स्वाभिमान जागृत करना पहली प्राथमिकता होती है।

यह स्वाभिमान अपनी भाषा संस्कृति और गौरवपूर्ण इतिहास से निर्माण होता है। आज विश्व के सभी शक्ति सम्पन्न देश अपनी भाषा के माध्यम से ही सिर मौर बने है। अपनी भाषा को खोने से केवल भाषा ही समाप्त नही होती अपितु वहाँ की संस्कृति समाप्त हो जाती है।

संस्कृति विहीन राष्ट्र प्राणहीन हो जाता है। राष्ट्र की रक्षा केवल सेना या संविधान मात्र से नहीं हो सकती। उसकी भाषा और संस्कृति की रक्षा के बिना सेना और संविधान भी राष्ट्र रक्षा नहीं कर सकते।

-डॉ.कृष्ण चंद्र पांडे

छात्र वीथिका

गीतामृतम्

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाधि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥
असंशयं महाबहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥
चतुर्विधा भजन्ते मां जनारु सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतवर्षभ ॥
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते
प्रियो हि ज्ञानिनोत्यर्थमहं स च मम प्रिय :॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

शीतल-आचार्य
(संस्कृत पत्रकारिता)

विद्याधनम्

न चोरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धते एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनधानम् ॥
नास्ति विद्यासमो बन्धुर्नास्ति विद्यासमः सुहृत्।
नास्ति विद्यासमं वितं नास्ति विद्यासमं सुखम् ॥
ज्ञातिभिर्वण्टयते नैव चोरेणापि न नीयते।
दाने नैव क्षयं याति विद्यारत्नं महाधनम् ॥
सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम्।
अहार्यत्वादनर्घ्यत्वादक्षयत्वच्च सर्वदा ॥
अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रम् मित्रस्य कुतो सुखम् ॥
रूपयौवनसम्पन्नाः विशाल कुलसम्भवाः।
विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धाः इव किंशुका :॥
विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम् ॥

अंकितः (कर्मकाण्ड)

अनुशासनम्

मा कुरू दर्पं मा कुरू गर्वम्।
मा भव मानी मानय सर्वम् ॥
मा भज दैन्यं मा भज शोकम्।
मुदि तमना भव भोदय लोकम् ॥१॥

मा वद मिथ्या मा वद व्यर्थम्।
न चल कुमार्गे न कुरू अनर्थम् ॥
पाहि अनाथं पालय दीनम्।
लालय जननीजनक विहीनम् ॥२॥

तनयं पाठय तनयं पाठय।
शिक्षय सगुणं दुर्गुणं वारय ॥
कुरू उपकारं कुरू उद्धारम्।
अपनय भारं व्यज अपकारम् ॥३॥

मा पिव मादकवस्तु अपेयम्।
मा भज दुर्व्यसनं परिहेयम् ॥
मा नय पलमपि व्यर्थं समयम्।
कुरू सकलं निजकार्यं समयम् ॥४॥

नेहा कुमारी (आचार्य योग)

वाल्मीकि रामायण

उपकारफलं मित्रम् उपकरोऽरिलक्ष्णम्।
उपकार करना मित्रता का लक्षण है और
अपकार करना शत्रुता का ॥
ये शोकमनुवर्तन्ते न तेषां विद्यते सुखम्।
शोक युक्त मनुष्य को कभी सुख नहीं मिलता ॥
सुख - दुर्लभं हि सदा सुखम्।
सुख सदा नहीं रहता हैं ॥
मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धि।
मूर्ख लोग दूसरों के ज्ञान से संचालित होते हैं।
येषां न चेतांसि ते एव धीराः।
जिनके मन को विकार को प्राप्त नहीं होते,
वे ही धैर्यशाली हैं।)
नैकत्र सर्वे गुणः सन्निपातः।
सभी गुण एक ही स्थान पर नहीं मिलते।
अर्थो हि कन्या परकीय एव
कन्या वस्तुतः परायी वस्तु हैं।
सोत्साहानां नास्त्यसाध्यं नाराणम्।
उत्साही मनुष्यों के लिए कुछ भी असाध्य नहीं हैं।

बिन्दू-आचार्य (साहित्य)

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय

रामायण को रच कर जिसने जीना हमको सिखाया है।
उन वाल्मीकि भगवान का मौनधारा में घर बन आया है ॥
संस्कृति की गुँज को जिसने घर–घर में गुँजाया है।
उन वाल्मीकि भगवान का मौनधारा में घर बन आया है ॥
कवियों की श्रेणी में जो सबसे पहले आया है।
उन वाल्मीकि भगवान का मौनधारा में घर बन आया है ॥
ऋषियों की भूमि का जिसने मान बढ़ाया है।
ऐसे वाल्मीकि भगवान का मौनधारा में घर बन आया है ॥
जिनकी निर्मल रचना से यह जीवन स्वच्छ हो पाया है।
ऐसे वाल्मीकि भगवान का मौनधारा में घर बन आया है ॥
राम जैसा आदर्श जिन्होनें जगत को दिखलाया है।
उन वाल्मीकि भगवान का मौनधारा में घर बन आया है ॥
माता जानकी के सिर पर जिसने हाथ टिकाया है।
उन वाल्मीकि भगवान का मौनधारा में घर बन आया है ॥
जिनकी लेखनी का जादू पूरे जगत में छाया है।
उन वाल्मीकि भगवान का मौनधारा में घर बन आया है ॥
राम राज्य का सपना जिसने हमें दिखाया है।
उन वाल्मीकि भगवान का मौनधारा में घर बन आया है ॥

दीपक-आचार्य (वेद)

मम प्रिय भाषा संस्कृत

संस्कृत जगतः अतिप्राचीना समृद्धा शास्त्रीया च भाषा वर्तते। संस्कृत वाक, भारती, सुरभारती, अमरभारती, देववाणी दैवीवाक्, देवभाषा, अमरवाणी इत्यादिभिः नामभिः एतद्वाषा प्रसिद्धा। भारतीयभाषासु बाहुल्येन संस्कृतशब्दाः उपयुक्ताः संस्कृतात् एव अधिका भारतीयभाषा उदुताः। व्याकरणेन सुसंस्कृता भाषा जनानां संस्कारप्रदायिनी भवति।

अष्टाध्यायी इति नाम्नि महर्षिपाणिनेः विरचना जगतः सर्वासां भाषाणाम् व्याकरणग्रन्थेषु अन्यतमा, वैयाक्रणानां भाषाविदां भाषाविज्ञानिनां च प्रेरणास्थानं इवास्ति।

संस्कृत वाङ्मये विश्ववाङ्मये स्वस्य अद्वितीयं स्थानम् अलंकरोति। संस्कृतस्य प्राचीनतमाग्रन्थाः वेदाः सन्ति ! वेद पुराण, शास्त्र, इतिहास, काव्य नाटक, दर्शनाभिः अनन्तवाङ्मयरूपेण विलसन्ति अस्ति एषा देववाक।

न केवल धर्म, अर्थ काम, मोक्षात्मकाः चतुर्विधपुरुषार्थ हेतुभूताः विषयाः अस्थाः साहित्यस्य शोभां वर्धयन्ति अपितु धार्मिक, नैतिक, आध्यात्मिक, लौकिक, पारलौकिक विषयेः अपि सुसम्पन्ना इयं देववाणी अव एव उच्यते संस्कृतिः संस्कृताश्रिता अश्वघोष, कालिदास दण्डी भवभूति जयदेव आदि कवि प्रभृतयो महाकाव्यो नाटकारश्च संस्कृत भाषायाः अस्ति।

नीलम-आचार्य (साहित्य)

कीदृशी रीतिरियम् ?

शरीरमुज्जवलं परं मलिनं तु मनः
इहलोकस्य कीदृशी रीतिरियम् ?
कोवाऽत्र समर्थः समर्पयितुम्
शुद्धां प्रीतिं निःस्वार्थपराम् ?

वहवोस्मदीयास्तिरोभूताः
स्वप्नाश्च वहवो विलयं गताः।
स्वनयनाभ्यां हि विलोकितो मया
विजयोऽपि निजपराजयेषु ॥

सर्ववन्दित एवोदीयमानसूर्यः
न केनाऽपि कदाचिदस्तगामी।
आयुगयुगान्तरेभ्यः प्रचलिता
निरवच्छिन्ना रीतिरियम् ॥

नाऽत्र कृष्णोऽस्ति न चाऽर्जनः
कुतो वा निष्काम कर्ममन्त्र :।
भव्रेऽस्मिन् करूणाविरहिते
कुतो मित्रता केनाऽपि सह ?

इहजीवनस्य मार्गेषु सन्त्यनेकविभ्रमविवादा :
परन्त्वनायासेनैवाऽत्र प्रदीपन्यते परोपदेशा :॥

गतानुगतपथेनैव चलति यानम्
पन्थाः प्राचीनः पथिकस्तु मूर्खः।
नवपथमनुसृत्य हि प्रचलिन्ति

कविः सिहः सुपुत्रश्च केवलम् ॥

मोनिका- (आचार्या द्वितीय वर्ष)

यस्य बुद्धि बलं तस्य

एकस्मिन् वने एकः सिहः वसति स्म। सः सिहः अतीव क्रूरः आसीत्। सः प्रतिदिनम् एकं मृगं खादति स्म। एकदा एकः शृगालः तत्र आगवान् सः शृगालः अतीव चतुरः आसीत्। सिंहः शृगालः समीपम् आगत्य तं खादितुं तत्परः भवति। तदा शृगालः रोदनं करोति। सिंहः शृगालं ! पृच्छति-किमर्थं रोदनं करोति। शृगालः वदति। राजन्। वने एकः अन्यः सिंहः अस्ति। सः मम पुत्रान् खादितवान्। अतः अहं रोदनं करोमि। सिंहः सक्रोधं पृच्छति। कुत्रास्ति सः सिंहः?
शृगालः वदति। समीपे एव एकः कूपः अस्ति। सः तत्रैव निवासं करोति। सिंहः वदति। माम् नयतु तत्र। अहं तत्र गत्वा पश्यामि। तं सिहं च मारयिष्यामि।
शृगालः वदति। श्रीमान्। आगच्छतु। अहं तं दर्शयामि।

चतुरः शृगालः तं सिंहं कूपस्य समीपं नमति कथयति च सः सिंह अस्मिन् कूपे वसति। सिंह कूपे पश्यति। कूपजले सः स्व प्रतिबिम्बं पश्यति। तं दृष्ट्वा सः उच्चैः गर्जनं करोति। गर्जनात् कूपात् प्रतिध्वनि आगच्छति। कूपे अन्यः सिंहः अस्ति इति मत्वा सः सिंहः कूपे कुर्दनं करोति। सः तत्रैव मृतः भवति। एवं शृगाल स्वबुद्धि बलेन आत्मरक्षां करोति।

रजनी-आचार्य (संस्कृत पत्रकारिता)

शिक्षा

प्रश्नमञ्जरी

विषयः – वेदः

1.माध्यन्दिनसंहितायामध्यायाः कति सन्ति ?

(क) 25 (ख) 50 (ग) 60 (घ) 40

2.ऋग्वेदे कति अष्टकाः सन्ति ?

(क) 15 (ख) 10 (ग) 09 (घ) 08

3. सामवेदस्य कति शाखाः सन्ति ?

(क) 1000 (ख) 1001 (ग) 1005 (घ) 100

4. कस्मिन् वेदे यमयमीसम्वादोऽस्ति ?

(क) ऋग्वेदे (ख) यजुर्वेदे (ग) सामवेदे (घ) अथर्ववेदे

5. यजुर्वेदस्य शिक्षाग्रन्थः का ?

(क) याज्ञवल्क्यशिक्षा (ख) नारदीयशिक्षा (ग) पाणिनिशिक्षा (घ) लोमशीशिक्षा

6.आम्नायः कस्य नामोऽस्ति ?

(क) वेदस्य (ख) उपनिषदः (ग) अरण्यकम् (घ) ब्राह्मणम्

7. विकृतिपाठभेदाः कति सन्ति ?

(क)अष्टौ (ख) नव (ग) दश (घ) पञ्चदश

8. शुक्लयजुर्वेदस्य कति शाखाः सन्ति ?

(क)15 (ख) 16 (ग) 17 (घ) 20

9.द्विविधो वेदोस्ति -

(क)यजुर्वेदः (ख) सामवेदः (ग) अथर्ववेदः (घ) ऋग्वेदः

10. ऋग्वेदे कति मण्डलानि सन्ति ?

(क) दश (ख) द्वादश (ग) पञ्चदश (घ) शतम्

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

व्यवहारवाक्यानि

१. मम नाम अनिलः।	मेरा नाम अनिल है।
२.भवतः नाम किम् ?	आपका नाम क्या है ?
३.मम नाम सीता।	मेरा नाम सीता है।
४.भवत्याः नाम किम् ?	आपका नाम क्या है ?
५.अहं अध्यापकः।	मैं अध्यापक हूँ।
६.भवान् कः ?	आप क्या हैं ?
७.अहं छात्रः।	मैं छात्र हूँ।
८.मम जनपदस्य नाम कपिष्ठलम्।	मेरे जिले का नाम कपिष्ठल है
९.भवतः जनपदस्य नाम किम् ?	आपके जिले का नाम क्या है ?
१०.मम प्रान्तस्य नाम हरियाणा।	मेरे प्रान्त का नाम हरियाणा है।

सुभाषितम्

अमन्त्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम्।
अयोग्यः पुरुषो नास्ति, योजकस्तत्र दुर्लभः ॥

अर्थात कोई ऐसा अक्षर नही जो मन्त्र न हो, कोई ऐसी वनस्पति नही है जो औषधि न हो, कोई ऐसा व्यक्ति नही है जो अयोग्य हो, केवल योजक (उनकी पहचान/योजना करने वाले) ही दुर्लभ है।

गुरुपूर्णिमायाः निहितार्थः

गुरूमहिमाविषये महात्मना कबीरेणोक्तम् –

"गुरू गोविन्द् दोऊ खड़े काके लागू पायँ।
बलिहारी गुरू आपकी गोबिन्द दियो मिलाय" ॥

इत्यनया साखीदृशा गुरोः स्थानं वस्तुतः गोविन्दस्य (ईश्वरस्य) उपरि वर्तते। किन्तु कबीरदासेन गुरोः स्थानं गोविन्दसमं: नैवोक्तम्। सम्प्रति वयं पश्यामः समाजे वहवः छद्मगुरवः येन केन प्रकारेण शिष्यसमूहस्य विस्तारं कृत्वा वेदोपनिषद्-माध्यमेनैव स्वस्य प्रवचनं प्रसारयन्ति। अनन्तरं मन्यमानम् ईश्वरं भूत्वा समाजस्य पुरतः तिष्ठन्ति। तथा च अनीत्याचारेण धनं भूमिं वैभवञ्च सम्पाद्य आश्रमादिकं निर्मान्ति। ततः परम् अनेकेषु नगरेषु सम्पत्तिं सम्पादयन्ति। ते गुरवः एव शिष्यसमूहस्य कृते ईश्वरः भवन्ति। एतादृशी परम्परा समाजं ईश्वरविमुखं करोति। अतः एतस्य विषयस्य गहनं चिन्तनमावश्यकम्। वस्तुतः कः गुरुः भवेत ? समाजजनानां सक्रियता एतस्मिन् विषये बहु आवश्यकी यत् यः गुरुः ईश्वरात् विमुखीकरणं कारयती, सः वस्तुतः गुरुः नास्ति प्रत्युत् छद्मपूरुष एव भवति। एतादृशाः पातकीजना एव गुरुभूत्वा अस्माकं कृते मार्गदर्शनं यच्छन्ति। तैः सह सर्वदा सम्पर्कः न भवेत्, तान् परिहर्तव्यः। एतदेव गुरुपूर्णिमायाः निहितार्थः।

डॉ. शीतांशुः त्रिपाठी
सहायक आचार्य
(साहित्य)

संस्कृते किन्न विद्यते

संस्कृते भारतीयत्वं संस्कृते सत्यनिष्ठता।
संस्कृते त्यागभावश्च संस्कृते किन्न वर्तते ॥१॥
संस्कृते शस्त्रशास्त्राणि संस्कृते धर्मसंस्कृतिः।
संस्कृते ज्ञानगाम्भीर्यं संस्कृते किन्न वर्तते ॥२॥
संस्कृते विश्वविज्ञानं संस्कृते विश्वन्तनम्।
संस्कृते विश्वकल्याणं संस्कृते किन्न वर्तते ॥३॥
संस्कृते वेदराशिश्च संस्कृते काव्यसागरः।
संस्कृते शास्त्रनिकराः संस्कृते किन्न वर्तते ॥४॥
संस्कृते कामसूत्रञ्च संस्कृते मोक्षसूत्रकम्।
संस्कृते कर्मसूत्रञ्च संस्कृते किन्न विद्यते ॥५॥
संस्कृते मुनयस्सिद्धाः संस्कृते च विशारदाः।
संस्कृते गुरवश्रेष्ठाः संस्कृते किन्न विद्यते ॥६॥
संस्कृते मानसम्मानं संस्कृते वित्तवैभवम्।
संस्कृते सौख्यशान्तित्वं संस्कृते किन्न विद्यते ॥७॥
संस्कृते सर्वकल्याणं संस्कृते देशभक्तिता।
संस्कृते मातृसेवा च संस्कृते किन्न विद्यते ॥८॥
संस्कृते नीतिसाहित्यं संस्कृते देवकृत्यकम्।
संस्कृते विश्वसाहित्यं संस्कृते किन्न विद्यते ॥९॥
संस्कृते राममर्यादा संस्कृते लक्ष्मणोत्सर्गः।
संस्कृते कृष्णगीता च संस्कृते किन्न विद्यते ॥१०॥
संस्कृते भारतन्यासः संस्कृते प्राक्सुकल्पना।
संस्कृते नव्यता नित्यं संस्कृते किन्न विद्यते ॥११॥

डॉ. शशिकान्ततिवारी
सहायक आचार्य
(दर्शन)

आगामिन्याःगतिविधयः

जयतु संस्कृतम्

पञ्जीकरण आरम्भ
सत्र 2021-22

जयतु भारतम्

- ✓ संस्कृत पत्रकारिता
- ✓ योग
- ✓ वेब-डिजाईनिंग इन संस्कृत
- ✓ संगणक (कम्प्यूटर)
- ✓ जीवन-प्रबन्धन (गीता)
- ✓ आयुर्वेद
- ✓ ज्योतिष
- ✓ वास्तुशास्त्र

अंशकालीन पाठ्यक्रम (डिप्लोमा)

- ✓ भाषाशिक्षण
- ✓ लिपिशिक्षण
- ✓ वैदिक-गणित
- ✓ वेद
- ✓ कर्मकाण्ड (पौरोहित्य)
- ✓ पर्यावरण

आचार्य (ए.ए.एम)

- व्याकरण – ज्योतिष
- साहित्य – दर्शन
- वेद – योग
- हिन्दू अध्ययन – संस्कृतपत्रकारिता
- धर्मशास्त्र – पुराणेतिहास

शास्त्री (बी.ए.)

- व्याकरण – ज्योतिष
- साहित्य – दर्शन
- वेद – योग
- धर्मशास्त्र – पुराणेतिहास
- संस्कृतपत्रकारिता

विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लाभ-

- संस्कृत विषयों के साथ आधुनिक विषयों का अध्ययन।
- हिन्दी व अंग्रेजी विषय अनिवार्य रूप में।
- राजनीति, इतिहास वैकल्पिक विषय।
- शास्त्री करके प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में बैठनें (I.A.S., I.P.S) का सुनहरा अवसर।
- भारतीय सेना में R.T. (J.C.O) बनने का सुनहरा अवसर।
- चिकित्सा (आयुर्वेद डिप्लोमा)
- संचार (सूचना-तकनीकि)

प्रवेश प्राप्त करने के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.mvsu.ac.in देखें।
संपर्क-सूत्र- 93500-45366

विशेष - विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए छात्रावास की व्यवस्था उपलब्ध है।

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः, अस्थायी परिसर(कैथल)
कार्यालय परिसर- डॉ भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय (कैथल-136027)
www.mvsu.ac.in

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः ,कपिष्ठलम्, हरियाणा

संस्कृतसप्ताहसमारोहः – 2021
(22/08/2021 दिनाङ्कतः 28/08/2021 दिनाङ्कं यावत्)

क्रमः	दिनाङ्कः	वक्ता	सञ्चालकः
1.	22/08/2021 (रविवासरे)	समयः – अपराह्न 4:30 वादनतः उद्घाटनपूर्वकं विशिष्टव्याख्यानञ्च मुख्यवक्ता – डॉ. कृष्ण सिंह आर्य विषयः – राष्ट्रीय एकात्मता में संस्कृत की भूमिका	डॉ.जगतनारायणकौशिकः
2.	23/08/2021 (सोमवासरे)	समयः – पूर्वाह्न 11:00 वादनतः विशिष्ट-व्याख्यानम् – व्याकरणे मुख्यवक्ता – प्रो. सत्यप्रकाश दुबे विषयः – संस्कृत साहित्य में व्याकरण का वैशिष्ट्य	डॉ.शर्मिला
3.	24/08/2021 (भौमवासरे)	समयः – पूर्वाह्न 11:00 वादनतः विशिष्ट-व्याख्यानम् – दर्शने मुख्यवक्ता – प्रो. पवन शर्मा मुख्यातिथिः – प्रो. कृष्णकान्तशर्मा विषयः – भारतीय ज्ञान-विज्ञान और दर्शन के प्रतिष्ठापन में संस्कृत	डॉ.शशिकान्ततिवारी
4.	25/08/2021 (बुधवासरे)	समयः – पूर्वाह्न 11:00 वादनतः विशिष्ट-व्याख्यानम् – ज्यौतिषे मुख्यवक्ता – प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी विषयः – वर्तमान समय में ज्यौतिष एवं वास्तुशास्त्र की प्रासंगिकता	डॉ.नरेशशर्मा
5.	26/08/2021 (गुरुवासरे)	समयः – पूर्वाह्न 11:00 वादनतः विशिष्ट-व्याख्यानम् – साहित्ये मुख्यवक्ता – प्रो. सी उपेन्द्र राव विषयः – वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत का अध्ययन	डॉ.रामानन्दमिश्रः
6.	27/08/2021 (शुक्रवासरे)	समयः – पूर्वाह्न 11:00 वादनतः विशिष्ट-व्याख्यानम् – वेदे मुख्यवक्ता – प्रो. रवि प्रकाश आर्य मुख्यातिथिः – प्रो. विद्येश्वर झा विषयः – वेदों में विज्ञान का स्वरूप	डॉ.अखिलेशकुमारमिश्रः
7.	28/08/2021 (शनिवासरे)	समयः – पूर्वाह्न 11:00 वादनतः विशिष्टव्याख्यानम् समापनसत्रम् , मुख्यवक्ता -- प्रो. चांद किरण सलूजा विषयः – इक्कीसवीं सदी में संस्कृत शिक्षा का स्वरूप	डॉ.सुरेन्द्रपालवत्सः

संयोजकः
डॉ.जगतनारायण कौशिकः
(सहाचार्यः)

कार्यक्रमसंयोजकः
डॉ. कृष्णचन्द्रपाण्डेयः
(सहायकाचार्यः)

निवेदकः
प्रो.यशवीरसिंहः
(कुलसचिवः)

आमन्त्रणपत्रम्

मान्याः,
विदाङ्कुर्वन्तु तत्रभवन्तो यत् महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालय द्वारा - 22/08/2021 दिनाङ्कतः 28/08/2021 दिनाङ्कं यावत् समायोज्यमाने संस्कृतसप्ताहसमारोहे विविधाः कार्यक्रमाः निर्धारिताः सन्ति। एतस्मिन् शुभावसरे तत्रभवतां श्रीमतां समुपस्थितिः सादरं सम्प्रार्थ्यते।

संस्कृत सप्ताह समारोह
22-28 अगस्त 2021

Google Meet joining info
Video Call link:
https://meet.google.com/jam-zapf-gre